जन्म शताब्दी पुस्तकमाला- ६४

अवतार की आँधी फिजाँ बदल देती है

(प्रवचन)

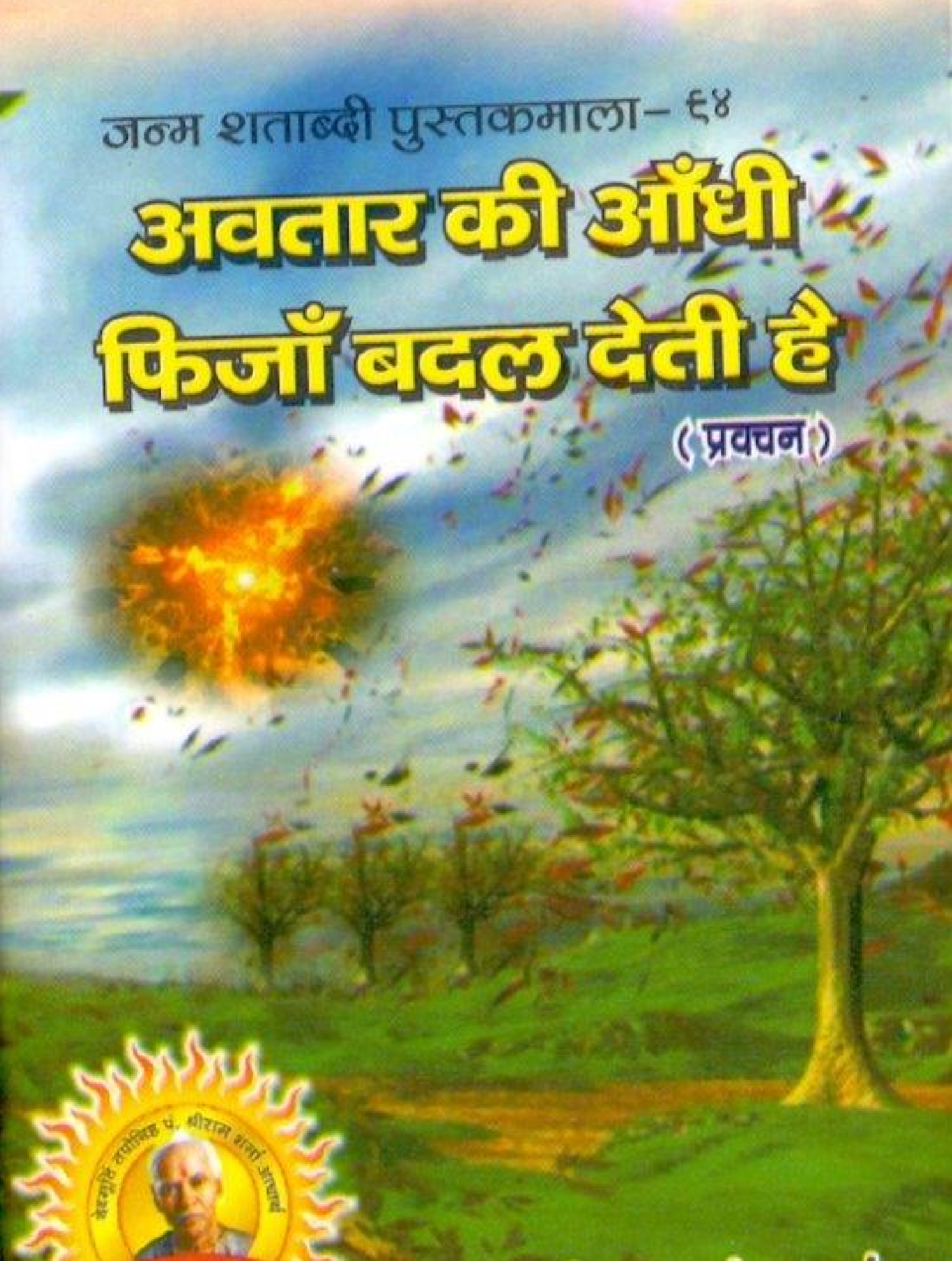

अवतार की आँधी—फिजाँ बदल देती है

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मित्रो! जो आदमी हँसता हुआ, खिलखिलाता हुआ रहता है, उसके चारों ओर खुशियाँ छाई रहती हैं। हँसने-हँसाने वाले खुद भी खिलखिलाते रहते हैं और दूसरों को भी हँसाते रहते हैं। भगवान श्रीकृष्ण को देखिए—हँसने वाले भगवान, हँसाने वाले भगवान, रास करने वाले भगवान, नाचने वाले भगवान, बाँसुरी बजाने वाले भगवान, साहित्यकार और कलाकार भगवान, संगीत से प्रेम करने वाले भगवान। अरे आप इनसे कुछ तो सीखें और अपनी सारी जिंदगी को हलका बनाकर जिएँ। सारी जिंदगी हर समय मुँह फुलाकर रहने से जिंदगी जी नहीं जा सकती। इस तरह से आप खुद भी नाखुश रहेंगे और रोकर

जिएँगे। शिकायतों पर जिएँगे, तो आप मर जाएँगे। जिंदगी इतनी भारी हो जाएगी कि उसे फिर ठीक नहीं कर पाएँगे। उसके नीचे आप दब जाएँगे, कुचल जाएँगे। अगर आप लंबी उम्र तक जिंदा और स्वस्थ रहना चाहते हैं, तब आप हँसने-हँसाने की कला सीखें। अगर आपको हँसना आता है, तो समझिए कि जिंदगी के राज को आप समझते हैं।

साथियो! हँसी के लिए, हँसने-हँसाने के लिए ढेरों चीज हमारे पास हैं। आपके पास हर चीज नहीं है, तो क्या आप चिड़चिड़ाते हुए, शिकायत करते हुए बहुमूल्य जीवन को यों ही बरबाद कर देंगे? क्या आपको निखिल आकाश हँसता हुआ दिखाई नहीं देता। अगर आप कवि हृदय हैं, सरस हृदय हैं, तो आपको सब कुछ हँसता हुआ दिखाई पड़ सकता है। आकाश में बादल आते हैं, घुमड़ते हुए-बरसते हुए दिखाई पड़ते हैं, क्या आप इनका आनंद नहीं ले सकते? नदियाँ कलकल करती हुई बहती हैं, क्या आप इनका आनंद नहीं ले सकते? आपको इनका

आनंद लेना चाहिए और आपको कलाकार होना चाहिए। जिंदगी जीने की कला को आपको समझना चाहिए। जिंदगी में आनंद के अनुभव होने चाहिए। जीवन में हँसने का समय होना चाहिए, हँसाने का समय होना चाहिए।

भगवान को हम कलाकार कहते हैं। श्रीकृष्ण भगवान ने रासलीला के माध्यम से हलकी-फुलकी जिंदगी, हँसने-हँसाने वाली जिंदगी की कला सिखाई। रासलीला गाने की विद्या है, नृत्य की विद्या है। नहीं साहब! श्रीकृष्ण भगवान ने तो हँसने-हँसाने की विद्या बहुत छोटेपन में सीखी थी, हम तो उम्र में बड़े हो गए हैं। नहीं बेटे, बड़ी उम्र के हों तो क्या, योगी हों तो क्या, तपस्वी हों तो क्या, ज्ञानी हों तो क्या, महात्मा हों तो क्या? हँसना आपको भी आना चाहिए, हँसाना आपको भी आना चाहिए। गांधी जी के नजदीक मुझे बहुत दिन रहने का मौका मिला। शुरू में वे जिस कोठी में रहते थे, उससे मैं दूर रहता था, तो मुझे बार-बार उनके हँसने की आवाज आती थी। उन दासता के

दिनों वे इतने गंभीर विषयों पर बातें करते थे जैसे कि जाड़े की समस्या, वेश्याओं की समस्या, अन्यान्य सामाजिक समस्या, करोड़ों लोगों के भाग्य के निर्माण की समस्या—इतनी समस्याओं के बीच भी मैंने उनको हँसते हुए देखा है। हमारे आपके पास तो यह भी समस्या नहीं है। आपके पास क्या समस्या है? बस एक ही समस्या है बेटे की और पैसे की। देश, समाज और संस्कृति को तो आप जानते भी नहीं हैं कि उनके प्रति भी आपका कुछ उत्तरदायित्व है। लेकिन मैंने गांधी जी को इन तमाम समस्याओं के बाद भी हँसते हुए देखा है। एक बार उनसे पूछा कि बापू एक बात तो बताइए कि आप इतने गंभीर रहते हैं, इतनी चिंताओं से घिरे रहते हैं, इतने गंभीर विषय आपके पास हैं। इतनी असफलताएँ आपके पास आती हैं, इतनी समस्याओं का समाधान सुझाते हैं, पर इस कदर आप हँसते कैसे हैं?

गांधी जी ने कहा—"मैं इसीलिए एक सही जिंदगी जी पा रहा हूँ। मेरे जिंदा रहने का और कोई

तरीका नहीं। अगर मैं खुश नहीं तो मेरी मौत, मेरी हँसी नहीं तो मेरी मौत समझो।'' मित्रो! जिसके चेहरे पर हँसी नहीं आती है, उसे बस मरा ही समझो। श्रीकृष्ण भगवान ने वह कला सिखाई, जिसको हम जिंदगी का प्राण कह सकते हैं, जीवन कह सकते हैं। 'रास' इसी का नाम है। नहीं साहब, इसमें तो बहुत रंगदारी है? नहीं बेटे, इसमें स्वाभाविकता है, शालीनता है। आप महाभारत पढ़ लीजिए, भागवत पढ़ लीजिए, जिस समय तक उन्होंने रासलीला की है, तब उनकी उम्र दस साल की थी। दसवें साल तक सब रासलीला बंद हो गई थी। सात साल की उम्र से प्रारंभ हुई थी और दस साल की उम्र में सब रासलीला खत्म हो गई थी। दस साल से ज्यादा में कोई रासलीला नहीं खेली गई। उसमें कामुकता नहीं थी, ब्याह-शादी की कोई बात नहीं थी।

तब उसमें क्या बात थी? उसमें था हर्षमय-आनंदमय जीवन, उसमें कन्हैया ने चाहा कि छोटे-छोटे बच्चे हों, साथ-साथ घुल-मिलकर हँसें-खेलें।

स्त्री-पुरुष के बीच शालीनता का क्या फरक होना चाहिए, शील और आचरण का क्या फरक होना चाहिए, यह जानें। अगर एकदूसरे को अलग कर देंगे, काट देंगे, तो फिर आप किस तरह से जिएँगे ? माँ बेटे साथ-साथ नहीं रहेंगे, तो किसके साथ रहेंगे ? बाप-बेटी, भाई-बहन साथ-साथ नहीं रहेंगी। बेटी बाप की गोदी में नहीं जाएगी, क्योंकि वह स्त्री है और ये पुरुष है। दोनों को अलग कीजिए, छूने मत दीजिए। औरत को इस कोने में बिठाइए और मरद को उस कोने में बिठाइए। अरे भाई, ये कहाँ का न्याय है ? स्त्री और पुरुष कंधे से कंधा मिलाकर काम करें, गाड़ी के दो पहियों के तरीके से काम करें, तो ही जीवन में आनंद है, प्रगति है।

मित्रो! श्रीकृष्ण भगवान ने उस जमाने में लड़के-लड़कियों की एक सेना पैदा की और उसे एक दिशा दी। उन्होंने कहा कि लड़के और लड़कियों में अंतर करने से क्या होगा ? हम और आप सब बच्चे हैं।

उस जमाने का पुरुषवादी समाज, परस्त्रीगामी समाज, जिसमें पाप और अनाचार का बंधन नहीं लगाया गया था, केवल स्त्री-पुरुष को अलग रखने की व्यवस्था की गई थी। जहाँ शील आँखों में रहता है, उस पर ध्यान नहीं दिया गया था, केवल शारीरिक बंधनों में शील की रक्षा करने की कोशिश की गई थी, श्रीकृष्ण भगवान ने उसे तोड़ने की कोशिश की।

भगवान श्रीकृष्ण का जीवन सिद्धांतों का जीवन था, आदर्शों का जीवन था। उनकी सारी लीलाएँ सिद्धांतों और आदर्शों को प्रख्यात करने वाले जीवन से ओत-प्रोत थीं।

मित्रो! बात चल रही थी श्रीकृष्ण भगवान की। कृष्ण भगवान का रास्ता दूसरा था। रामावतार में जो अभाव रह गया था, जो कमी रह गई थी, जो अपूर्णता रह गई थी, वह उन्होंने पूरी की। इस बात से फायदा यह हुआ कि यदि शरीफों से वास्ता न पड़े, तब क्या करना चाहिए? खराब लोगों से वास्ता पड़े तब, खराब भाई हो तब, खराब मामा हो तब,

खराब रिश्तेदार हों तब, क्या करना चाहिए? तब के लिए श्रीकृष्ण भगवान ने नया रास्ता खोला। इसमें विकल्प हैं। इसमें शरीफों के साथ शराफत से पेश आइए। जहाँ पर न्याय की बात कही जा रही है, उचित बात कही जा रही है, इनसाफ की बात कही जा रही है, वहाँ पर आप समता रखिए और उसको मानिए और आप नुकसान उठाइए। लेकिन अगर आपको गलत बात कही जा रही है, सिद्धांतों की विरोधी बात कही जा रही है, तो आप इनकार कीजिए और उससे लड़िए और यदि जरूरत पड़े, तो उनका मुकाबला कीजिए और मारिए।

कंस श्रीकृष्ण भगवान के रिश्ते में मामा लगता था। लेकिन वह अत्याचारी और आततायी था। अतः उन्होंने यह नहीं देखा कि रिश्ते में कंस हमारा कौन होता है। उन्होंने न केवल स्वयं ऐसा किया वरन अर्जुन से भी कहा कि रिश्तेदार वो हैं, जो सही रास्ते पर चलते है। सही रास्ते पर चलने वालों का सम्मान करना चाहिए, उनकी आज्ञा माननी चाहिए, उनका

कहना मानना चाहिए। उनके साथ-साथ चलना चाहिए। लेकिन अगर हमको कोई गलत बात सिखाई जाती है, तो उसे मानने से इनकार कर देना चाहिए।

मित्रो! कृष्ण भगवान की दिशाएँ और शिक्षाएँ यही थीं कि कोई हमारा रिश्तेदार नहीं है। हमारा रिश्तेदार सिर्फ एक है और उसका नाम है—धर्म। हमारा रिश्तेदार एक है और उसका नाम है—कर्त्तव्य। आप ठीक रास्ते पर चलते हैं, तो हम आपके साथ हैं और आपके हिमायती हैं। बाप के साथ हैं, रिश्तेदार के साथ हैं। अगर आप गलत रास्ते पर चलते हैं, तो आप रिश्ते में हमारे कोई नहीं होते। हम आपकी बात को नहीं मानेंगे और आपको उजाड़कर रख देंगे।

मित्रो! ये हैं श्रीकृष्ण भगवान के जीवन की गाथाएँ, जो राम के जीवन की विरोधी नहीं हैं, वरन पूरक हैं। राम के अवतार में जो कमी रह गई थी, उसे कृष्ण अवतार में पूरा किया। राम का वास्ता अच्छे आदमियों से ही पड़ता रहा। अच्छे संबंधी मिलते रहे। उन्हें सुमंत मिले तो अच्छे, कौशल्या मिलीं तो अच्छी,

लक्ष्मण मिले तो अच्छे। उन्हें सब शरीफ ही मिलते गए। अगर शरीफ आदमी न मिलते तो क्या करते? तब श्रीकृष्ण भगवान ने जो लीला करके दिखाई, वही वे भी करते। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समझाया कि तू लड़ चाहे तेरे गुरु हों या कोई भी क्यों न हों।

भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी सारी जिंदगी बादलों के तरीके से जी। उन्होंने कहा—"हमारा कोई गाँव नहीं है। सारा गाँव हमारा है। जहाँ कहीं भी हमारी जरूरत होगी, हम वहाँ पर जाएँगे।" वे कहाँ पैदा हुए? वे मथुरा में पैदा हुए, फिर गोकुल में बसे, वहाँ गाय चराई। उज्जैन में पढ़ाई-लिखाई की। दिल्ली में कुरुक्षेत्र में लड़ाई-झगड़े में भाग लिया और फिर न जाने कहाँ-कहाँ मारे-मारे फिरते रहे। आखिर में कहाँ चले गए? आखिर में द्वारिका चले गए। आपके ऊपर तो 'होम सिकनेस' हावी हो गई है, जो घर से आपको निकलने नहीं देती। अरे साहब! घर से बाहर कैसे निकलें, हमें तो घरवालों की याद आती है, हमारा पोता याद करता होगा, पोती याद करती

होगी। हम अपने घर से बाहर नहीं जाएँगे, गाँव में ही हवन कर लेंगे। सौ कुंडीय यज्ञ तो हमारे गाँव में ही होगा। मंदिर बनेगा तो हमारे गाँव में ही बनेगा। अस्पताल बनेगा तो हमारे गाँव में ही बनेगा। गाँव-गाँव रट लगाता रहता है। श्रीकृष्ण भगवान ने इस मान्यता को समाप्त किया और कहा कि सारे गाँव हमारे हैं। हर जगह हमारी जन्मभूमि है। वे दो बार मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, हिमाचल प्रदेश गए, दिल्ली गए। वे सब प्रदेशों में गए बादलों के तरीके से। महापुरुषों की कोई जन्मभूमि नहीं होती, कोई गाँव नहीं होता, वरन सारा संसार ही उनका अपना घर होता है।

फिजाँ बदल देती है—अवतार की आँधी

मित्रो! लोग अपनी-अपनी जन्मभूमि की रट लगाते रहते हैं कि यह मेरी जन्मभूमि है, वह मेरी जन्मभूमि है। अरे, जन्मभूमि किसकी होती है? जो केवल शरीर को ही सब कुछ मान लेते हैं, उन्हीं की जन्मभूमि होती है, श्रेष्ठ मनुष्यों की कोई जन्मभूमि

नहीं होती। हमारी तो हर जगह जन्मभूमि है। जहाँ कहीं भी हमारी आवश्यकता पड़ेगी, हम वहीं बस जाएँगे। नहीं साहब, हमारी तो अमुक जगह जन्मभूमि है और हम वहीं जाएँगे। नहीं, कोई जन्मभूमि नहीं। शंकराचार्य कहाँ पैदा हुए थे? केरल में पैदा हुए थे, परंतु वे सारे हिंदुस्तान में घूमते फिरे। उनकी प्रेरणा से दक्षिण भारत के लोग उत्तर में आ गए और उत्तर भारत के लोग दक्षिण भारत में चले गए। कुमारजीव कश्मीर में पैदा हुए थे और सूडान होते हुए मंगोलिया चले गए और चीन में मर-खपकर खत्म हो गए। ईसा कहाँ पैदा हुए थे? कहाँ जन्म लिया और कहाँ से कहाँ चले गए। मोहम्मद साहब मक्का में पैदा हुए और मदीने चले गए। वहाँ रहे और बाद में उस गाँव को छोड़कर और कहीं चले गए।

नहीं साहब! हम तो अपने गाँव में रहेंगे और गाँव को ही सब कुछ बनाएँगे और वहीं मरेंगे। नहीं मित्रो, इसकी कोई जरूरत नहीं है। जहाँ कहीं भी जगह है; जहाँ कहीं भी भूमि है; जहाँ कहीं भी

मौका है; जहाँ कहीं भी आपकी आवश्यकता है; आप वहाँ जाइए। नहीं साहब, हम तो गाँव में ही रहेंगे। गाँव में ही हमारे बच्चे रहेंगे। हमारे ही गाँव में पुस्तकालय बनेगा। नहीं, कोई जरूरत नहीं, जब आपके गाँव में बिना पढ़े-लिखे लोग हैं तो आप क्यों बनाते हैं, अपने गाँव में पुस्तकालय। गाँव-गाँव चिल्लाते हैं। यह 'होम सिकनेस' की, औरों से अपने को अलग करने की प्रवृत्ति है। नहीं साहब, इसके कारण तो सब छोड़कर चले गए। चले गए, तो चले गए, उनसे क्या मोहब्बत? मोहब्बत करनी है तो सिद्धांतों से कीजिए, आदर्शों से कीजिए। गाँव से क्या मोहब्बत, क्या रिश्ता? इसका सबसे अच्छा उदाहरण हमें श्रीकृष्ण भगवान के जीवन में देखने को मिलता है। भगवान की ये कथाएँ और प्रेरणाएँ हमें यही सिखाती हैं कि जहाँ हमारी आवश्यकता है, हमें वहीं बादलों के तरीके से जाना चाहिए।

मित्रो! भगवान श्रीकृष्ण की कथाएँ और प्रेरणाएँ हमको जाने क्या-क्या सिखाती हैं? श्रीकृष्ण का

जीवन हमें अध्यात्म का सही स्वरूप जानने की प्रेरणा देता है।

मित्रो! अध्यात्म क्या हो सकता है? अध्यात्म केवल वह है, जो हमारे क्रिया-कलाप में शामिल हो। यह बात हमने शुरू में ही बताई है। अध्यात्म को हम आपके क्रिया-कलाप में देखना चाहते हैं। आज्ञाचक्र जगने का मतलब आपका जीवनचक्र घूमा कि नहीं घूमा? नहीं महाराज जी, यह तो केवल सिर में घूमेगा। बेटे, सिर में कोई चक्र नहीं घूमता। घूमता है तो सारे क्रिया-कलापों में घूमता है। केवल घर में ही नहीं, सारे संसार में चक्र घूमता है। भगवान ने अपनी लीला के माध्यम से धर्मचक्र को घुमाया। वह धर्मचक्र जो रुक गया था, जिसका पहिया जाम हो गया था। उस पहिये को उन्होंने घुमाया, न केवल हिंदुस्तान में वरन सारे विश्व में घुमाया। धर्म का चक्र इसी को कहते हैं।

इसलिए मित्रो, श्रीकृष्ण भगवान ने गीता में अध्यात्म का सूत्र समझाया। गीता का कर्मयोग

बतलाया। गीता के कर्मयोग में उन्होंने कहा कि कर्म करने का अधिकार मनुष्य को है, किंतु फल प्राप्त करने के लिए हैरान होने की, उतावली करने की आवश्यकता नहीं है। काम करो, ईमानदारी से काम करो, शराफत से काम करो, बस, वही काफी है आपके आत्मसंतोष के लिए। फल मिला या नहीं? हम नहीं जानते कि फल क्या मिलेगा या क्या नहीं मिलेगा? बहुत से आदमी दुनिया में ऐसे हुए हैं, जिन्होंने बेहद अच्छे अच्छे काम किए हैं, लेकिन ईसामसीह को फाँसी पर चढ़ा दिया गया, सुकरात को जहर का प्याला पिला दिया गया। न जाने कितने अच्छे-अच्छे आदमियों को क्या-क्या किया गया। अत: हम सफलता की कोई गारंटी नहीं ले सकते, लेकिन हम आपको शांति की गारंटी दे सकते हैं।

मित्रो! अगर आप शराफत के मार्ग पर चलेंगे और यह समझते रहेंगे कि हम नेक काम कर रहे हैं, शराफत का काम कर रहे हैं तो फिर जटायु के तरीके से आपको सफलता मिल जाए, तो क्या और न मिले

तो क्या—कोई अंतर नहीं पड़ेगा। आततायी रावण से सीता को छुड़ाते हुए जटायु मारा गया, उस नेक काम के लिए अपनी जिंदगी देनी पड़ी, लेकिन जटायु को आप हारा हुआ नहीं कह सकते। भगतसिंह को फाँसी लग गई, तख्त पर टाँगा गया। ईसा को कीलें गाड़ दी गईं, लेकिन हम ईसा को हारा हुआ नहीं कहेंगे, भगतसिंह को मरा हुआ नहीं मानेंगे। सफलता-असफलता से क्या बनता बिगड़ता है? सफलता-असफलता की कोई कीमत नहीं। आप ने सही काम किया; नहीं किया, आपके लिए इतना ही काफी है।

साथियो! कर्मयोग में भगवान ने यह बताया है कि आप यह मत देखिए कि उसमें फायदा हुआ कि नहीं? हमने जो चाहा था, वह मिला कि नहीं मिला? मिलना, न मिलना आपके हाथ की बात नहीं है। यह परिस्थितियों और प्रारब्ध की बात है। यह आपके प्रारब्ध की बात है कि दूसरे लोगों की सहायता या बिना सहायता के आप क्या कर सकते हैं? किसी कार्य का क्या फल मिलता है, आपके

हाथ में यह कुछ नहीं है। लेकिन एक बात पूरी तरह से आपके हाथ में है कि आप अपनी जिम्मेदारियाँ निभाएँ और कर्त्तव्य को पूरा करें। आप कर्त्तव्यों को पूरा करेंगे, जिम्मेदारियों को निभाएँगे, तो यकीन रखिए, आपको वह लाभ मिल जाएगा, जो कि योगी को मिलना चाहिए; संत को मिलना चाहिए और ज्ञानी को मिलना चाहिए। यही गीता का कर्मयोग है। गीता में अर्जुन को भगवान ने कर्मयोग की शिक्षा दी और उसे कर्म में लगाया।

एक बार अर्जुन भगवान श्रीकृष्ण से कहने लगा कि भगवान मैं तो आपके विराट स्वरूप का दर्शन करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा कि भगवान के दर्शन इन आँखों से नहीं हो सकते। तो फिर भगवान को कैसे देखा जा सकता है ? इस पर भगवान श्रीकृष्ण ने कहा—**'दिव्यं ददामि ते चक्षु'** अर्थात मैं तुझे दिव्य आँखें दूँगा, विवेक की आँखें दूँगा, ज्ञान की आँखें दूँगा। मात्र ज्ञान की आँख से ही भगवान को देखा जा सकता है और किसी तरीके से नहीं। चमड़े की आँख

से आप भगवान को नहीं देख सकते। इससे आप पत्थर देख आइए। नहीं साहब, हम तो इसी से भगवान को देखेंगे। नहीं, आप इससे भगवान को नहीं देख सकते। जब यह चमड़े का विषय ही नहीं तो आप देख कहाँ से लेंगे ? आपने क्या ठंढक देखी है, नहीं साहब, हमने तो केवल बरफ देखी है, ठंढ तक नहीं देखी। तो क्या आपने गरमी देखी है ? नहीं गरमी भी नहीं देखी है, आग देखी है। आग की बात हम नहीं पूछते, गरमी की बात पूछते हैं। नहीं साहब, गरमी तो नहीं देखी है। अच्छा, तो हमारा प्यार देखा है ? महाराज जी! प्यार तो आपका नहीं देखा। हाँ, आपके चेहरे की स्थिति, मुस्कान देखी है। मित्रो! हम प्यार की बात पूछते हैं, मुस्कान की नहीं।

मित्रो! अच्छा बताइए, आपने मेरा ज्ञान देखा है ? नहीं महाराज जी, ज्ञान भी नहीं देखा। ज्ञान आपने देखा नहीं, प्यार देखा नहीं, गरमी देखी नहीं, ठंढ देखी नहीं, तो फिर आप भगवान को कैसे देखेंगे ? नहीं महाराज जी! भगवान दिखा दीजिए।

पागल कहीं का, भगवान देखेगा। भगवान भी कोई देखने की चीज है! भगवान किसी ने नहीं देखा है। अर्जुन भी कह रहा था कि भगवान को दिखा ही दीजिए। श्रीकृष्ण ने कहा—चल तुझे दिखाते हैं। उन्होंने अपना विराट रूप दिखाया और कहा—देख यही है भगवान। यही स्वरूप उन्होंने अपनी माता यशोदा को भी दिखाया था। राम ने भी अपनी माता कौशल्या को अपना विराट रूप दिखाया था। उन्होंने काकभुशुंडि को दिखाया था और कहा था कि देख यही मेरा विराट रूप है।

साथियो! अगर आप आँखों से भगवान को देखना चाहते हो तो संसार में जितनी दिव्यशक्तियाँ हैं, जितनी दिव्य विचारधाराएँ हैं और जितने दिव्यकर्म दिखाई पड़ते हैं, उनमें आप भगवान की क्रीड़ा को देख सकते हैं। यही उनके क्रीड़ा करने योग्य स्थल हैं। उनको ही आप अक्षत चढ़ाइए, जल चढ़ाइए, अगरबत्ती जलाइए। उसमें ही अपनी अक्ल लगाइए अर्थात ध्यान कीजिए। ध्यान करने का मतलब है—

भगवान के लिए अपनी अक्ल खरच करना। '**अक्षतं समर्पयामि**' का अर्थ है—अपनी कमाई का एक हिस्सा लोकमंगल में लगा देना। '**आचमनं समर्पयामि**' एवं '**स्नानं समर्पयामि**' अर्थात पानी चढ़ा देने का भी यही मतलब होता है—समाज को श्रेष्ठ बनाने के लिए, लोगों को अच्छा बनाने के लिए, दुनिया में भलाई लाने के लिए अपना पसीना बहाइए, अपनी अक्ल लगाइए, अपना पैसा खरच कीजिए। पानी चढ़ाने का अर्थ है—पसीना बहाना, श्रम करना। अच्छाई के लिए मेहनत करना। पूजा-अर्चना के पीछे, कर्मकांडों के पीछे छिपे हुए भाव, शिक्षा एवं प्रेरणाओं को समझना बहुत जरूरी है।

भगवान ने गीता में हमें यही उपदेश सिखाया और यह कहा कि कोई भी श्रेष्ठ कार्य बिना श्रम और सहयोग के संभव नहीं है। उदाहरण के लिए, जब उन्होंने पहाड़ उठाया, तो ग्वाल-बालों से कहा कि आप जरा हिम्मत कीजिए, हमारे साथ आइए और हमारी मदद कीजिए, अपनी लाठी का सहारा

लगाइए। मित्रो! जनता को साथ लिए बगैर आप कुछ भी नहीं कर सकते। अकेले आप समाज को सुधारेंगे ? नहीं, आप अकेले कुछ भी नहीं कर सकते। आप लोगों को साथ बुलाइए, साथ लेकर चलिए। नहीं साहब, हम बड़े ज्ञानी हैं, बड़े विद्वान हैं। ठीक है, आप विद्वान हैं तो बहुत अच्छी बात है, लेकिन आपके साथ में लोकशक्ति है कि नहीं ? आप जनता के पास जाइए और लोकशक्ति को बढ़ाइए। लोकशक्ति को जगाए बिना राम का उद्धार नहीं हो सका; कृष्ण का उद्धार नहीं हो सका; बुद्ध का उद्धार नहीं हो सका और गांधी का उद्धार नहीं हो सका; किसी का भी उद्धार नहीं हो सका और न कभी हो सकता है। जनशक्ति को जगाइए, जनता के पास जाइए, जनता को साथ लीजिए। जनसहयोग लीजिए। श्रीकृष्ण भगवान का गोवर्धन उठाना, महाभारत में सेना को खड़ा कर देना, इस बात का सबूत है कि उन्होंने जो काम किए, मेहनत से किए और लोगों की सहायता से किए हैं—जनशक्ति को साथ लेकर किए हैं।

भगवान श्रीकृष्ण के ब्याह-शादी के बारे में कितनी ही किंवदंतियाँ मालूम पड़ती हैं। अभी जो आपको हम भागवत की कथा बताने वाले थे, उसमें पहला विषय श्रीकृष्ण भगवान के शादी-ब्याह वाला किस्सा ही था। लोगों ने उनके विवाह और रास को इतना घिनौना बना दिया है, जिसे हम नहीं चाहते हैं कि हमारे पिता के ऊपर—हमारे बुजुर्गों के ऊपर ऐसे गंदे और वाहियात आक्षेप लगाए जाएँ। हम इस बकवास को सुनना नहीं चाहते और न इस तरह की रासलीला को देखने का हमारा जरा सा भी मन है और न फुरसत है। नहीं, गुरु जी, रास देख लीजिए। नहीं बेटे, हम रास नहीं देखना चाहते। हम शिक्षा वाला नाटक देखना चाहते हैं, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण ने यह करके दिखाया था कि अपना राज्य सुदामा को सुपुर्द कर दिया था और तप करने चले गए। यह हमें पसंद है और इसे हम हजार बार देखेंगे। क्यों महाराज जी, आपने तो गोपियों वाली रासलीला और वह कपड़े चुराने वाली लीला देखी है? नहीं बेटे, यह

रासलीला हमको नापसंद है, क्योंकि यह समाज में अनाचार फैलाती है, समाज में भ्रष्टाचार फैलाती है, समाज में अनीति फैलाती है। हमारे आराध्य की हँसी उड़ाती है और हमारी संस्कृति के ऊपर कलंक लगाती है। यह हमें नापसंद है। इसे न हम देखना चाहते हैं और न सुनना चाहते हैं।

मित्रो! भगवान श्रीकृष्ण के दांपत्य जीवन के बारे में जो वाहियात बातें सुनने को मिलती रही हैं, इसके संबंध में जब मैं गहराई में गया तो पता चला कि ये तमाम वाहियात बातें पीछे पंडितों ने मिलाई हैं असल में उनका एक ही ब्याह हुआ था और रुक्मिणी को भी वे छीनकर नहीं लाए थे। रुक्मिणी के भाई रुक्म की रजामंदी से यह ब्याह हुआ था। जब महाभारत में यह कथा मैंने पढ़ी तो मुझे बहुत पसंद आई और तब से मैंने श्रीकृष्ण भगवान की शादी-ब्याह के बारे में भी जिक्र करना शुरू कर दिया। पहले मैंने यह फैसला किया था कि श्रीकृष्ण के ब्याह के बारे में मैं कुछ लिखूँगा ही नहीं।

बदरीनाथ किसे कहते हैं? बदरी माने बेर, बेर माने बदरी। बेरों का जंगल था वहाँ, जहाँ आज बदरीनाथ हैं। वे वहीं चले गए थे और अपनी धर्मपत्नी के साथ बारह वर्ष तक तप किया था। इसके पीछे सिद्धांत छिपा हुआ था, आदर्श छिपा हुआ था कि हमें एक ऐसी संतान चाहिए, जो कामुकता के संस्कारों से दूर हो। इसके पीछे उद्देश्य यह था कि श्रेष्ठ नागरिक होने के लिए संयम के साथ में, तप के साथ में, ज्ञान के साथ में एक सुसंस्कारी संतान देनी है। बारह वर्ष तक इसलिए तप करके आए थे। उनके केवल एक पुत्र उत्पन्न हआ था। उसका नाम प्रद्युम्न था।

मित्रो! श्रीकृष्ण भगवान का दांपत्य जीवन श्रेष्ठ वाला दांपत्य जीवन रहा है। उसमें इस तरह के बकवास की कोई गुंजाइश नहीं है कि उनकी हजारों रानियाँ थीं। उनकी जिंदगी की आखीर वाली दो घटनाएँ कितनी शानदार रही हैं। पहली घटना वह है जब उन्होंने संपत्ति इकट्ठी की और कहा

कि इसका हिसाब होना चाहिए कि कितना धन किस राज्य में कहाँ-कहाँ स्थापित हो? एक बार जब सुदामा जी द्वारका राज्य में आए और कृष्ण भगवान को बताया कि सुदामा नगरी का हमारा गुरुकुल टूटा-फूटा हुआ पड़ा है। हमारे यहाँ धन की कमी आ गई है। छात्रों के निवास के लिए स्थान की कमी पड़ गई है। पढ़ने के लिए पुस्तकें नहीं हैं। यह सुनकर उन्होंने सोचा कि पैसे का इससे अच्छा उपयोग और कुछ भी नहीं हो सकता है। आपके पास धन-संपदा हो तो आप सोचें कि इसे मेरा बेटा खाएगा, पोता खाएगा, लेकिन अगर कोई और खाएगा तो मैं उसकी जान ले लूँगा। अपनी सारी कमाई किसको देगा? बेटे-पोते को देगा अगर और किसी को देगा तो तेरी जान निकल जाएगी।

मित्रो! क्या हुआ? कृष्ण भगवान ने देखा कि राज्य इकट्ठा किया, पैसा इकट्ठा किया, लेकिन इसे खरच करना चाहिए था। आखिर इसे खरच कहाँ किया जाए? यह विचार कर ही रहे थे कि सुदामा जी

आ पहुँचे। उन्होंने सोचा, बस हो गया मेरा काम। यही तो मैं तलाश कर रहा था कि कोई ऐसा ठीक स्थान मिले, जहाँ हमारे धन का अच्छे से अच्छा उपयोग हो सके। समझ में नहीं आ रहा था कि मैं किसको दूँ, किसको न दूँ? माँगने वाले तो हजारों आते हैं, लेकिन जहाँ आवश्यकता है, ऐसा कोई स्थान या व्यक्ति नहीं मिला। सुदामा जी, आप ठीक समय पर आ गए। चलिए, जो कुछ भी मेरे पास है, वह सब मैं आपको देता हूँ—सब आपके सुपुर्द करता हूँ। उनका जो सारे का सारा धन था, उसे सुदामा पुरी भेज दिया और वहाँ का विद्यालय विश्वविद्यालय में बदल दिया गया।

मित्रो! यह उनके जीवन की निस्पृहता थी; उनका कर्मयोग था। कर्मयोग में आदमी की आसक्तियाँ और मोह कटते जाते हैं और उसे यह दिखाई देने लगता है कि हमें क्या चाहिए? हमारे में कमाने का माद्दा है, लेकिन कमाने के माद्दे की सार्थकता तब है, जब इसे किसी अच्छे काम में लगा सकें। मित्रो!

प्राचीनकाल में ऐसा ही होता रहा है। भगवान श्रीकृष्ण ने भी अपना सारा धन सुदामा को सुपुर्द कर दिया और वे निस्पृह हो गए। ये सारी बातें उन्होंने अपने जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए सार्थक कर दिखाई।

उनके जीवन की अंतिम कथा यह है कि उन्हें याद आया कि पहले जन्म में हमने बाली को छिपकर मारा था। छिपकर मारना हमारी गलती थी। उसे छिपकर नहीं मारना चाहिए था। यह कोई कायदा नहीं है कि आप छिप करके किसी को मारें। छिपकर के मारने वाले को हत्यारा कहते हैं, कसाई कहते हैं और जल्लाद कहते हैं। लड़ाई का कायदा यह है कि आप सामने वाले को भी हथियार दीजिए और खुद भी हथियार लीजिए, फिर चैलेंज कीजिए कि आइए, आपको भी अपनी रक्षा करने का अधिकार है। इस लड़ाई में जान हमारी भी जा सकती है और आपकी भी जा सकती है। आप हमारे ऊपर हमला कीजिए और हम आपके ऊपर

हमला करेंगे। दोनों बहादुर ये बातें एकदूसरे से कहते हैं। लेकिन जो आदमी बैठा हुआ है, सोया हुआ है और आपने ताड़ के पीछे से छिपकर के उसे मार दिया। सोए हुए को मार दिया, यह क्या घोटाला किया। रामचंद्र जी थे तो क्या हुआ, उन्होंने ऐसा करके गलती की थी।

मित्रो! श्री भगवान ने दिखाया कि गलती करने वाला कोई भी क्यों न हो, चाहे भगवान ही क्यों न हो, गलती की सजा से माफी नहीं माँग सकता। वही बाली इस जन्म में बहेलिया हो गया और आकर के जब श्रीकृष्ण भगवान पेड़ के नीचे बैठे हुए थे, तब उनको तीर मारा। तीर उनके पाँव में लगा, जिससे सुराख बन गया और सेप्टिक हो गया, टिटनेस हो गया। डॉक्टरों ने इंजेक्शन लगाए, बहुतेरा चिकित्सा उपचार किया, लेकिन कोई फरक नहीं पड़ा। कृष्ण भगवान वहीं ढेर हो गए। उनकी लाश वहीं पड़ी रही। बलराम ने भी देखा कि मेरा भाई मारा गया। अर्जुन भी वहाँ आ गए और जाकर उनका

अंतिम संस्कार किया। इस सारी कथा का महाभारत में विशद वर्णन है।

मित्रो! इसी के साथ सारी कथा पूरी हो जाती है। रही बात अलौकिकता और चमत्कार की तो महान व्यक्तियों के साथ इसका कोई लेना-देना नहीं है। चमत्कार तो आप जैसे लोगों के लिए है, जो इसे ही सब कुछ मानकर किसी की महानता का आकलन करते हैं और कहते हैं कि यदि चमत्कारी होगा तो महात्मा होगा; चमत्कारी होगा तो भगवान होगा; चमत्कारी होगा तो गुरु होगा और अगर चमत्कारी नहीं हुआ तो कुछ नहीं, मात्र सामान्य व्यक्ति है। नहीं साहब, गुरु गोविंदसिंह ने तो एक से एक बड़े चमत्कार दिखाए थे, आप भी दिखाइए। नहीं भाईसाहब, गुरु गोविंद सिंह से जब एक व्यक्ति जिद करने लगा और कहने लगा था कि मेरा खुदा बड़ा चमत्कारी है। वह एक बीज से हजारों फल निकालता है। बादलों को पिघलाकर पानी की बूँदें बना देता है। आप भी बालों में से बालू निकाल

दीजिए, कानों से मेंढ़क निकाल दीजिए, तो हम आपको चमत्कारी मानेंगे। उन्होंने कहा—तू बाजीगरी को चमत्कार मानता है। वास्तविक चमत्कार तो यह है कि आदमी के हृदय में भगवान पैदा किया जा सकता है या नहीं? जो आदमी पापी और पतित की जिंदगी जी रहा है, भीरू और परावलंबी जिंदगी जी रहा है। यदि वह अब स्वावलंबी और शानदार जिंदगी जीता है श्रेष्ठ जिंदगी जीता है, लोगों को तारने वाली, विकास वाली जिंदगी जीता है तो यही सबसे बड़ा चमत्कार है। इससे बड़ा और कोई चमत्कार नहीं हो सकता।

श्रीकृष्ण भगवान चमत्कारी थे, लेकिन लौकिक दृष्टि से वे घोर असफल। गोपियों से प्यार करते थे, राधा से प्यार करते थे, लेकिन उन्हें छोड़कर वे कहाँ चले गए? गोपियाँ चिल्लाती रह गईं। ब्याह किया, राजपाट बसाया, अर्जुन को राजा बनाया। आखिर में भागकर स्वयं द्वारका चले गए। अपना कुटुंब बसाया जो अंत में आपस में लड़-मरकर

खत्म हो गए। ये कैसे भगवान थे जिनके खानदान वाले सब खत्म हो गए। सारा खानदान चौपट हो गया। अर्जुन गोपियों को लेकर जा रहे थे। उनको रास्ते में भील मिल गए और गोपियों को ले गए। राधिका जी जाने कहाँ चली गईं? सब कुछ बिखर गया। आखिर में जो कुछ बचा-खुचा था, उसे भी लोग समेट ले गए और श्रीकृष्ण भगवान खाली हाथ रह गए। आखिरी वक्त में यह भी नहीं हो सका कि कोई मुँह में गंगाजल ही डाल दे या गौदान करा दे। गौदान कराने वाले तो नहीं हुए, उलटे उनकी लाश जंगल में पड़ी रही और वह भी अर्जुन को जलानी पड़ी।

मित्रो! इस तरह संसार की दृष्टि से भगवान श्रीकृष्ण घोर असफल सिद्ध हुए, लेकिन आदर्शों की दृष्टि से—सिद्धांतों की दृष्टि से घोर सफल सिद्ध हुए। वे भगवान जो आज के दिन पैदा हुए, जिन्होंने न केवल अपने क्रिया-कलापों से कितना शिक्षण दिया वरन असंख्य नर-नारियों को संसार-सागर से

पार लगाया। उनका शिक्षण इतना शानदार है कि अगर हम आज की जन्माष्टमी के दिन इन चरित्रों को, इन प्रेरणाओं को, इन दिशाओं को अपने जीवन में धारण करने में समर्थ हो जाएँ तो मजा आ जाए और आज का जन्माष्टमी का पर्व सार्थक हो जाए। हमारा समझाना भी सार्थक हो जाए, अगर ये प्रेरणाएँ जो भगवान ने अपनी स्थूल जीवन की लीलाओं द्वारा दी थीं, इनको हम धारण कर पाएँ तब—गीता में हमको जो बताया गया है, उसे हम धारण कर सकें तब। अगर हममें से प्रत्येक के भीतर जीवंत भगवान का वह सिद्धांत आदर्शवादिता के रूप में उतर सके, हर क्षण उसकी आवाज और वाणी को हम सुन सकें, तो हमारा जीवन धन्य हो जाए और धन्य हो जाए आज का दिन और आज का हमारा लेक्चर। बस आज की बात यहीं समाप्त।

॥ ॐ शांतिः ॥

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)